International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 706-708

सरस्वती सदृश विलुप्त होती गंगा : एक मंथन

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप मिश्र
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
भारतीय संस्कृति के स्पन्दन में गंगा की भूमिका अप्रतिम है। इस प्रसंग में सर मार्टिमर व्हीलर की यह उक्ति अत्यन्त समीचीन है कि यदि सिंधु नदी ने इस देश को सभ्यता दिया तो गंगा ने इसे आस्था प्रदान की। भारत की सांस्कृतिक सरिता के प्रवाह में गंगाघाटी की उर्वरा भूमि की केन्द्रीय भूमिका रही है। गंगा की उपत्यका में स्थित समूचे उत्तर भारत को विभिन्न भौगोलिक इकाइयों में विभक्त किया गया है, यथा– उच्च गंगाघाटी, मध्य गंगाघाटी व निम्न गंगाघाटी। यह भू–भाग विभिन्न सरिताओं एवं उपसरिताओं से सतत् प्रवाहमान एवं अभिसिंचित है। गंगा के अतिरिक्त यमुना, घाघरा, कोसी, गोमती, सई, इत्यादि नदियों ने यहाँ की भूमि को उर्वरा प्रदान की है। यहाँ की शस्यस्यामला उर्वरा भूमि, जलवायु एवं पर्यावरण मानव के अधिवास हेतु अत्यन्त अनुकूल रहा है और इसी से आकर्षित होकर मानव इस क्षेत्र में आबाद होने के लिए बाध्य हुआ।

मूल शब्द: एक मंथन, भारतीय संस्कृति, गंगा की भूमिका

प्रस्तावना
प्रकृति रचित जीव–जगत में मानव ही एक मात्र ऐसा प्राणी जो शारीरिक रूप से सबसे कमजोर सिद्ध हुआ है। उदाहरणार्थ यदि हम मानव समाज के इर्द–गीर्द विचरण करने वाले मवेशियों को ही देखे तो उनके बच्चे जन्म होते ही विचरण (उछल–कूद) करने लगते है परन्तु मनुष्य के बच्चे में जन्म के छः–सात माह बाद ये शारीरिक कुशलता सम्भव हो पाती है। इन कमजोरी के बावजूद मनुष्य मानसिक बल प्रयोग के कारण आज समस्त जीव–जगत का स्वामी बन बैठा है। या ये कहें कि आज मनुष्य अपनी विलक्षण प्रतिभा के बल पर प्रकृति की समस्त चुनौतियों का सहस्र स्वागत किया है।
आज दुनिया के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण चुनौती पृथ्वी के तापमान का बढ़ना है[1]। यदि ये माना जाय कि ये समस्या आधुनिक युग की नवीन समस्या है तो ये सहजता से नकारा जा सकता है क्योंकि इस समस्या का सूत्रपात प्राचीन युग से ही दिखाई देती है, जिसका उदाहरण निर्बाध रूप से सैन्धव सभ्यता के उत्खनित प्रमुख पुरास्थलों से मिलता है[2]। प्रारम्भ में प्रागैतिहासिक मानव जीवन यापन के निमित्त पर्यावरण का उपयोग तो प्रारम्भ कर दिया था परन्तु ये पहल सामान्यतः जीवन यापन हेतु कन्दमूल–फल एवं पशुओं के मांस आदि पर ही निर्भर था। परन्तु जैसे–जैसे जनसंख्या में वृद्धि होती गई मानव की आवश्यकताओं में भी वृद्धि होना स्वाभाविक हो गया। हम देखते है कि पूर्वपाषाण कालीन मानव जहॉ एकाकी जीवन यापन करता था वहीं मध्यपाषाण काल तक आते–आते एक सामाजिक संरचना दृष्टिगत होती है, जिसके प्रमाणस्वरूप हमें मृदभाण्ड एवं बहुसंख्यक छोटे–छोटे उपकरण मिलते है। मृदभाण्ड जहॉ संचय मूलक प्रवृत्ति का द्योतक है वहीं छोटे उपकरण मानवीय तकनीकि विकास के प्रथमचरण का सुस्पष्ट अध्याय प्रस्तुत करता है। कालान्तर में नवपाषाण काल तक कृषि एवं कृषिपरक उपकरणों का विकास इत्यादि विभिन्न चरणों से गुजरता हुआ मानव आद्य ऐतिहासिक एवं ऐतिहासिक युग तक सोपानपद चरणों में निरन्तर विकास करता गया। प्रातिनूतन काल के अंत एवं नूतन काल के प्रारम्भ में हम देखते है कि मानव का पदार्पण आन्तरिक भागों में अर्थात पर्वतीय क्षेत्र से मैदान की तरफ हुआ, तथा उसका जीवन पूर्णरूपेण नदियों तथा तटीय क्षेत्रों पर निर्भर हो गया[3]। जिसके फलस्वरूप सभ्यता का विकाश हुआ नदी घाटियों यथा सरस्वती नदी घाटी एवं गंगा नदी घाटी के विभिन्न युगों का संक्षिप्त सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय अध्ययन ही मेरा मुख्य उद्येश्य है।

सरस्वती नदी
सरस्वती नदी ऋग्वेद तथा पौराणिक हिन्दू ग्रंथों में वर्णित प्रमुख नदियों में से एक है। ऋग्वेद के नदी सूक्त के एक श्लोक (10.75) में सरस्वती नदी को यमुना के पूर्व और सतलुज के पश्चिम में बहते हुए बताया गया है[4]। उत्तर वैदिक ग्रथों यथा ताण्डय ब्राह्मण और जैमिनिय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरुस्थल में सूखा हुआ उल्लिखित गया है[5]। महाभारत भी सरस्वती नदी के मरुस्थल में विनाशन नामक जगह में अदृश्य होने का वर्णन करता है। महाभारत में सरस्वती नदी को प्लक्षवती नदी, वेद स्मृति, वेदवती आदि नामों से भी दर्शाया गया है[6]।
ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक एवं पौराणिक ग्रंथों में दिये सन्दर्भों के आधार पर भू–वैज्ञानिकों का मानना है कि हरियाणा से होकर राजस्थान तक बहने वाली वर्तमान सूखी हुई घग्घर या हकरा नदी प्राचीन सरस्वती नदी की प्रमुख सहायक नदी थी जो ईसा पूर्व 5000 से ईसा पूर्व 3000 तक प्रवाहमान थी। ऐसा ज्ञात होता है कि तात्कालीन समय में सतलुज एवं यमुना की कुछ धाराऍ सरस्वती नदी में आकर मिलती थी। इनके अतिरिक्त दो नदी धाराएं भी दृशद्वती एवं हिरण्यवती जो लुप्त होने के कगार पर थी सरस्वती नदी की मुख्य धारा में आकर मिलती थी। भू–वैज्ञानिक आकड़ों के अनुसार ऐसा माना जाना है कि लगभग ईसा पूर्व 1900 के आस–पास भूगर्भीय बदलाव के कारण यमुना तथा सतलुज अपनी राहें बदल दी, तथा लगभग ईसा पूर्व 1600 के आस–पास दृशद्वती के सूख जाने के कारण सरस्वती नदी विलुप्त हो गयी[7]।
ऋग्वेद में सरस्वती नदी को नदीतमा (नदियों मे श्रेष्ठ) की उपाधि दी गयी है। ऋग्वेद के नदी सूक्त में एक श्लोक (02. 41.16) में इसे सर्वश्रेष्ठ मॉ, सर्वश्रेष्ठ नदी एवं सर्वश्रेष्ठ देवी कह कर सम्बोधित किया गया है। इसी तरह की स्तुति ऋग्वेद

के अन्य छन्दों (6.61., 8.81, 7.7.6 और 10.17) में भी की गई है। एक अन्य श्लोक (7.9.52. तथा 8.21.18) में सरस्वती नदी को दूध और घी से परिपूर्ण बताया गया है। श्लोक संख्या (7. 36.6.) में तो सरस्वती को सप्तसिन्धु नदियों की जननी बताया गया है। पूर्ववैदिक काल में हम सरस्वती नदी की स्थिति सर्वोत्म स्थान पर पाते है। वैदिक सभ्यता में ये नदी सबसे बड़ी एवं मुख्य मानी गई है। इसी कारण सरस्वती को विद्या और ज्ञान की देवी के रूप में भी पूजा जाने लगा। ऋग्वेद में सरस्वती नदी नदी देवी के रूप में पूजित है। ऋग्वेद के नदी सूक्त में सरस्वती का उल्लेख इस प्रकार किया गया हैः–

इमं में गंगे यमुने सरस्वती शुतुद्रि स्तोमं सचता परूष्ण्या।
असिक्न्या मरूद्वधे वितस्त्यार्जीकीये श्रृणुह्या सुषोमया।।

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसु।। ऋग्वेद 1.3.10

चेदयित्री सुनृतानां चेतन्ती सुमतिनां।
यज्ञं दधे सरस्वती।। ऋग्वेद 1.3.11

परन्तु उत्तर वैदिकयुग तक आते–आते प्रमुख साहित्यिक स्रोतो में सरस्वती के विलुप्त होने के लिखित साक्ष्य प्राप्त होने लगते हैं। इसके अतिरिक्त इसके उद्गम स्थल की प्लक्ष प्रस्रवन के रुप में पहचान की गई है जो यमुनोत्री के पास स्थित है। यजुर्वेद की वाजस्नेयी संहिता 34.11 में कहा गया है कि पांच नदियॉ अपने पूरे प्रवाह के साथ सरस्वती में प्रविष्ट होती थी। सम्भवतः ये पाचों नदियॉ सतलज, व्यास, रावी, चेनाव एवं दृष्टावती रही होगीं[8]। इसरो द्वारा किये गये शोध से भी पता चला है कि आज भी यह नदी हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में पृथ्वी के आन्तरिक भागों में प्रवाहित हो रही है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या के युवराज भरत के कैकेय प्रदेश से अयोध्या लौटने के प्रसंग में सरस्वती का वर्णन आता है। और इस प्रसंग में गंगा, यमुना और सरस्वती का एक साथ उल्लेख आया है[9], ऐसा प्रतीत होता है कि ये स्थान इलाहाबाद का संगम तट होगा। यहां कहना तर्क संगत होगा कि गंगा नदी एवं यमुना नदी के अतिरिक्त सरस्वती नदी भी दृश्यमान स्वरूप में रही होंगी। क्योंकि संगम नोज से लगभग 5 किलोमीटर पूर्व उत्तर दिशा में गंगा नदी के बायें तट पर एक नदी मनसईता का संगम होता है, पुरातत्वविद्ो का मानना है कि ये मनसईता नदी ही तात्कालीन सरस्वती नदी रही होगी क्योंकि मनसईता अर्थात मनस्वीता का तात्पर्य ज्ञान या ज्ञानी या ज्ञान की देवी अर्थात सरस्वती नदी से है।

सरस्वती च गंगा च युग्मेन प्रतिपद्य च।
उत्तरान् वीरमत्स्यनां भारूण्डं प्राविशद्वनम्।।
वाल्मिकि रामायण अयोध्या काण्ड 71.5

गंगा

गंगा नदी भारत में जननी के रूप में पूजी जाने वाली धार्मिक नदी के रूप में अपना विशिष्ट महत्व रखती है। गंगा नदी को भारत में आदर एवं सम्मान के साथ गंगा मॉ के नाम से प्रतिष्ठित किया जाता है। एक मॉ जिस प्रकार अपने नवजात बालक को अपने वक्षस्थल का पान कराकर पोषण प्रदान करती है ठीक उसी प्रकार गंगा नदी भी मैदानी भागों को सिंचित करके एक बड़ी जनसंख्या को कृषि के माध्यम से पोषण प्रदान करती है[9]। गंगा नदी का जल धार्मिक महात्म के साथ ही साथ भारत की विशाल जनसंख्या को पीने के पानी के साथ ही सिंचाई हेतु जल प्रदान करती है। ज्यादातर सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ क्योंकि यहॉ अन्न–जल के विपुल भण्डार मानव सभ्यता एवं संस्कृति को फलने–फूलने में सहयोग प्रदान करते हैं[10]। जल ही जीवन है इस अवधारणा के आधार पर हम कह सकते हैं कि गंगा नदी भारतीय उपमहाद्वीप के लिए एक वरदान है। गंगा नदी के किनारे गंगा नदी घाटी सभ्यता फली–फूली, संस्कृति एवं परम्पराओं के माध्यम से भारतीयों ने इस पवित्र देवतुल्य नदी को देवी और मॉ का स्थान प्रदान कर इसके उपकारो का प्रतिफल देने का प्रयास किया है।

गंगा की उत्पत्ति की भौगोलिक स्थिति ग्लेशियर से हुई है। गंगोत्री से निकलने वाली धारा भागीरथ के नाम से प्रसिद्ध है। देव प्रयाग में इस नदी को गंगा नाम की प्राप्ति हुई है। गंगांत्री ग्लेशियर से बंगाल की खाड़ी तक 2525 किलोमीटर की लम्बी यात्रा करते हुए सुन्दरवन के मुहाने पर बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

भारत की देवतुल्य नदी गंगा आज शहरीकरण से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण के कारण स्वयं के अस्तित्व के लिए संघर्ष करती प्रतीत हो रही है। गंगा नदी की दुर्दशा के लिए हम भारतीय ही दोषी है जिसने भैतिकता एवं आधुनिकता के चकाचौध में अंधाधुन शहरीकरण करके प्रकृति की इस अनमोल रतन को दूषित करने का प्रयास किया है। शहरों के किनारे बसे कल–कारखाने एवं शहरों के सीवेज का बिना ट्रीटमेंन्ट किये हुए दूषित जल प्रत्यक्ष रूप से ममतामयी गंगा मॉ के आंचल में निर्विरोध प्रवाहित किया जा रहा है। इस प्रकार हम देखते है कि अपनी संस्कृति की आधार बिन्दु गंगा नदी घाटी के द्वारा मानव सभ्यता आज आधुनिक एवं सर्वोत्तम हुई है उसी की दुर्दशा को देखकर प्रत्येक सच्चे प्रकृति प्रेमी का रोम–रोम असह्य दुःख से तड़प उठता है।

वर्तमान में गंगा के अस्तित्व संकट के लिए विभिन्न प्रकार की व्यवहारिक समस्याएं जिम्मेदार है। जिसके अन्तर्गत जल विद्युत परियोजनाएं, शहरो का बिना ट्रीटमेंन्ट किये हुए दूषित जल, कल–कारखानों विषेषकर चर्म उद्योग से सम्बन्धित कारखानों से अवशिष्ट एवं दूषित जल, शहरीकरण के कारण ज्ञानी एवं अज्ञानी भारतीयों का पालिथीन प्रयोग एवं ज्यादातर अंधविश्वास से प्रेरित रसायन युक्त दुर्गा प्रतिमाओं, गणेश प्रतिमाओं[11] एवं फूल–मालाएं भी गंगा एवं अन्य नदियों के लिए विशेष अस्तित्व संकट समस्याओं के रूप में उभरकर सामने आ रही हैं[12]।

इस प्रकार हम देखते है कि वैश्विक स्तर पर जहॉ मानव नित नये आविष्कार करने में लगा है, वहीं इन आविष्कारों एवं रूढ़ियों के फलस्वरूप बढ़ते दुष्प्रभाव यथा वातावरणीय परिवर्तन, जिसका स्पष्ट प्रभाव हम मानव के शारीरिक दुर्बलता के साथ–साथ उसकी मानसिक क्षीणता के रूप में स्पष्ट दिखता है। परन्तु आज हम देख रहे है कि सम्पूर्ण मानव समुदाय इस इस विकृति से उभरना चाह रहा और स्वच्छ भारत एवं निर्मल भारत जिस तरह से जन समुदाय का नारा होता जा रहा है। तथा बदलते परिदृष्य में हम देख रहे है कि एक ओर केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार अपने–अपने स्तर पर जोर–शोर से प्रयास कर रहे है वही जन सामान्य में छोटे–छोटे संगठन बना कर गंगा बचाओं मुहीम को अंजाम दिया जा रहा है। परन्तु जन मानस का बहुत बड़ा हिस्सा इस बचाव कार्य से कोसों दूर नजर आ रहा।

वर्तमान केन्द्र सरकार जहॉ 04 मई 20016 को ''नमामि गंगे कार्यक्रम''[13] का शंख नाद गंगा सफाई हेतु शासकीय स्तर

रुपये 2037 करोड़ का फन्ड जारी किया[14]। जिससे उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं बिहार तक गंगा की सफाई हेतु चतुर्दिक विकास किया जा सके, साथ दिल्ली में यमुना नदी के किनारे घाटों और शमशानों की देख रेख की जा सके[15]। इसी तर्ज पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा नमामि देवी नर्मदे[16] सेवा यात्रा 11 दिसम्बर 2016 से 15 मई 2017 तक एवं असम सरकार द्वारा 31 मार्च 2017 से 04 अप्रेल 2017 तक ब्रह्मपुत्र नदी[17] की महत्ता के परिप्रेक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव सप्ताह मनाया गया जिसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति माननीय प्रणव मुखर्जी ने किया। इस उत्सव का उद्देश्य असम की कला, धरोहर एवं संस्कृति को प्रदर्शित करते हुये ब्रह्मपुत्र नदी की महत्ता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना आदि है। इस प्रकार हम देख रहे है कि केन्द्र एवं राज्य सरकारें अपने–अपने स्तर से विभिन्न परियोजनाओं द्वारा जन मानस को आकृष्ट कर रहे है।

नदी बचाओ चेतना का आगाज आज सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में हो रहा है। हाल ही में 15 मार्च 2017 को न्यूजीलैण्ड में माओरी समुदाय के लिए पवित्र माने जाने वाली एक नदी ''वांगनुई'' को ''जीवित इंसान'' का दर्जा दिये जाने के बाद उत्तराखण्ड माननीय उच्च न्यायालय ने 20 मार्च 2017 को दिये एक अभूतपूर्व निर्णय में देश की दो पवित्र नदियों गंगा और यमुना को ''जीवित मानव'' का दर्जा दिया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह पुरुषोत्तम 1996, प्रीलियूड टू अर्बनाइजेशन इन द सरयूपार प्लेन, अध्यक्षीय भाषण, द इण्डिया हिस्ट्री कांग्रेस, 57वाँ अधिवेशन, चेन्नई।
2. पाण्डेय, जे0 एन0 : पुरातत्व विमर्श, प्राच्य विद्या संस्थान, 2012 पृष्ठ सं0 429–436।
3. पाण्डेय, जे0 एन0 : पुरातत्व विमर्श, प्राच्य विद्या संस्थान, 2012 पृष्ठ सं0 269–272।
4. ऋग्वेद 10,75,5।
5. वकाणकर,वी0 एस0 और सी0 एन0 परचुरी : द लास्ट सरस्वती रिवर, मैसूर 1994, पृष्ठ सं0 45।
6. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर : 1,90,26।
7. लाल, वी0 वी0 : फ्रन्टियर ऑफ इन्डस सिविलाइजेशन।
8. महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर : 3, 130, 3–5, 9, 37, 1–2।
9. सिंह सविन्द्र, 2002, भैतिक भूगोल, गोरखपुर, बसुन्धरा प्रकाशन, पृष्ठ सं0 247–248।
10. उत्तराखण्ड की प्रमुख नदियां, इंडिया वाटर पोर्टल, 2009।
11. अब मूर्ति विसर्जन से नही होगी गंगा मैली : जोश 2009।
12. मॉ गंगा : भारतीय साहित्य संग्रह, 2009।
13. namamidevinarmade.mp.gov.in
14. नमामि गंगा विकास परियोजना : बिहार प्रभा 10 जूलाई 2014।
15. वार्षिक पत्रिका दृष्टि करेन्ट अफेयर्स टुडे वर्ष 2, अंक 11, मई 2017, पृष्ठ सं0 48।
16. मासिक मत्रिका प्रतियोगिता दर्पण : डॉ0 मुखर्जी नगर दिल्ली, अंक जनवरी 2017, पृष्ठ सं0 171।
17. namamibrahmputra.asam.gov.in